लघुकथा

डॉ॰ अनिता कपूर

कैलिफोर्निया अमेरिका

1

मैं जब भी गुरुद्वारा जाता हूँ, तो उनको मर्दों वाली तरफ के जूते रैक में ठीक से रखते हुए देखता। यहाँ भारत के गुरुद्वारों के तरह जूता रैक में कार-सेवा नहीं होती है। सब आपने जते निर्धारिक स्थान पर उतार कर अंदर चले जाते हैं और वापसी में अपने उतरे जूते आपको उसी स्थान पर ही मिलते हैं। बावजूद इसके उनको हमेशा वहीं कुछ न कुछ सेवा करते देख मेरे मन में आतुरता जागी और एक दिन मैंने उनसे पूछ ही लिया, 'मैंने सुना है आपका बेटा यहाँ बहुत अच्छा कमाता है अच्छा सैटल है फिर आप यह सब क्यों करते हैं....अंदर बैठ कर आप पूजा कर घर वापस क्यों नहीं जाते?''

"यही तो मेरी तकलीफ है इससे तो अच्छा होता.... मैं उसे अपना पेट काट काट कर अमरीका न भेजता। यहाँ आकर उसने हमसे रिश्ता ही तोड़ लिया...खुद को बड़ा समझने लगा है...हमें यहाँ बुला कर हमारी पेंशन शुरू करवा दी फिर भी हमें एक पैसा नहीं देता वो पेंशन भी उसके खाते में जमा होती है। और तो और हमारे पासपोर्ट भी छुपा दिये। हम वापस भी नहीं जा सकते। मांगने पर कहता है की वो गुम गए आप दूसरे बनवा लो....हमारा यहाँ और कोई सहारा नहीं है सिवाय इस रब के। मेरी बीबी यहाँ गुरुद्वारे में लंगर बनाने में मदद करती है और दोनों यहीं खा-पी कर यहीं सो जाते हैं।"

बात करते हुए मैंने उनके चेहरे पर ऐसा भाव देखा....जैसे हर शिकन पूछ रही हो " बेटा यहाँ गलती से भी बिखर गए जूते तो मैं ठीक कर देता हूँ पर हम बूढ़े माँ-बाप को हमारे ही बेटे ने बिखेर दिया उसे रब कब ठीक करेगा?"

2

अपना महलनुमा घर जिसमे गरिमामय ढंग से सजे हुए कितने ही कमरे, आधुनिक सुख-सुविधाओं और संपन्नता के प्रतीक सभी चीजें सभी कमरों में थी। यह सब देख देख कर मैं अपने घर की मिडिल क्लास हैसियत को मन ही मन ढांप कर नार्मल होने की कोशिश कर रही थी। अचानक उसे कुछ ज़ेवरों की याद आयीं और वो मुझे अपने बेडरूम में ले जाकर एक अल्मरी खोल कर सब दिखने लगी और उनकी कीमत सुन कर तो मैं भी अचंभे में आ गयी मन ही मन सोचने लगी की अलमारी में बंद ही रखने हैं तो खरीदे क्यों?

खैर मेरी इस सखी ने अपनी दीदी की जगह ली थी। दीदी और जीजाजी दोनों ही सुंदर तो नहीं थे पर दीदी के भाग्य से जीजाजी के व्यापार में इतनी तरक्की होने लगी की कुछ ही समय में उनकी गिनती शहर के अमीरों में होने लगी थी। और इधर मेरी सुंदर सखी की शादी एक साधारण परिवार तो हुई पर उसके भाग्य से आर्थिक स्थिति में कुछ खास उन्नति न होने से मेरी सुंदर सखी ने फिल्म "आखिर क्यों" वाली साली का हु बहू किरदार निभा दीदी और जीजा जी में तलाक करवा, खुद भी अपने पति से तलाक ले कर जीजाजी को पति बना लिया और पैसों में राज करने लगी। पैसे की चकाचौंध के आगे उसे किसी के दुख-दर्द से मतलब नहीं रहा। दीदी जो काफी समझदार और पड़ी लिखी तथा धारयावन महिला थी, ने इसे ही नियति मानकर आगे बदने का फैसला किया। उन्हे राजनीति में रुचि शुरू से थी पर मेके और पति से कभी सहयोग नहीं मिला था। तलाक के बाद उन्होने आपका आकाश खुद तराशा। आज दीदी शहर की मेयर है और मेरी मेरी सखी ने गहनों की चमक में इस कदर डूबी हैं की स्त्री होने का अर्थ भी शायद भूल गयी है। हमारे बीच अर्थ की समानता नहीं है पर मुझे आज वो बेहद गरीब और उतरन पहनने वाली महिला दिख रही है।

3

अजय तैयार हो कर कमरे से बाहर आया तो देखा रुचि अभी तक उन्हीं रात वालों कपड़ों में बैठी थी...."तुम तैयार क्यों नहीं हुई हमें देर हो रही है डॉक्टर से आपोइंटमेंट है जानती हो न".....रुचि ने अपनी तबीयत खराब होने का बहाना बनाया। अजय ने तुरंत फोन कर आज की आपोइंटमेंट रद्द कर आगे सप्ताह की आपोइंटमेंट बनवा ली थी।

अगले सप्ताह फिर वही बहाना सुन अजय को लगा की रुचि शायद जानबूझ कर ऐसा कर रही है। "रुचि क्या बात है तुम उसी दिन ही बीमार हो जाती हो जब हमें डॉक्टर के पास जाना होता है"।

रुचि ने रिएक्ट किया "हाँ तुम ठीक समझे....तुम्हारा डॉक्टर के पास जाने का कारण मैं जानती हूँ....मुझे सिर्फ एक तंदरुस्त बच्चा चाहिए फिर लड़का हो या लड़की....बल्कि मैं तो हर वक्त भगवान से लड़की के लिए ही दुआयें मांगती हूँ।" अजय बोला"पर मुझे लड़की नहीं चाहिए"

रुचि की आवाज़ थोड़ी तल्ख हो गयी....."लड़कियां माँ बाप का हर समय साथ देती हैं दूर रह कर भी खयाल रखती हैं वे घर की लक्ष्मी होती है और लड़के ....."

यह कहते कहते रुचि चुप हो गयी थी। अजय को अपने पर जैसे सीधा सीधा प्रहार लगा। वो गुस्से में बोला...."मेरे घर में रहना है तो सिर्फ लड़के को जन्म देना होगा"। रुचि भी जैसे आज कुछ फैसले के मूड में थी। वे तुरंत बोली..."अगर ऐसी बात है तो ठीक है पर जाने से पहले मैं तुम्बे कारण बताना जरूर चहुंगी की मैं सिर्फ लड़की क्यों चाहती हूँ....मई नहीं चाहती की मुझे मेरा बेटा बड़ा हो कर भुला दें जैसे तुमने अपनी माँ के साथ किया है"।

रुचि ने अजय को उसका भविष्य दिखा दिया था। अजय के कानों में एक बच्ची की आवाज़ गूंजी ...."पापा मुझे आने दो मैं आप दोनों का खूब खयाल रखूंगी"

अजय ने तुरंत माँ को फोन लगाया...."माँ थैंक्स ऐसी बहू चुनने के लिए। आप जल्दी से तैयार हो जाओ आपकी पोती आपको लेने आ रही है"